ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 78**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

पूरो : एक देह नहीं, एक आत्मा का संघर्ष

सोनी कुमारी कृष्णा
हिन्दी, हैदराबाद (तेलंगाना) भारत

Received-04.08.2025, Revised-11.05.2025, Accepted-17.08.2025 **E-mail : rajeshk4you@yahoo.co.in**

***सारांशः** "पिंजर" अमृता प्रीतम का वह कालजयी उपन्यास है, जो केवल भारत–पाक विभाजन की पीड़ा को ही नहीं, बल्कि एक स्त्री की आत्मिक यात्रा को भी बेहद मार्मिकता से प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास की नायिका पूरो (परो) न केवल एक पात्र है, बल्कि एक प्रतीक है – उस स्त्री का जो समाज, धर्म, परंपरा और पितृसत्ता के पिंजर में कैद है, पर अंततः अपने आत्म–सम्मान की उड़ान भरती है।*

***कुंजीभूत शब्द–** लोकनीति, प्रतिमान, नागरिक समाज, नौकरशाही, तर्कसंगत प्रतिमान, संवृद्धि प्रतिमान, सहभागी मॉडल।*

1. मासूम, संस्कारी, सपना देखने वाली लड़की – उपन्यास की शुरुआत में पूरो एक साधारण हिंदू पंजाबी परिवार की बेटी है – सुनहरे भविष्य और विवाह की मधुर कल्पनाओं में खोई हुई। उसका विवाह तय हो चुका है, और वह अपने भावी जीवनसाथी के साथ नवजीवन की कल्पनाएँ बुन रही है। पूरो की दुनिया छोटी है लेकिन उसमें विश्वास और उम्मीद है।

2. अपहरणः देह से आत्मा तक का हरण – इस शांत जीवन में भूचाल तब आता है, जब रश्मन नामक मुस्लिम युवक उसे अगवा कर लेता है। यह कोई प्रेम कहानी नहीं – बल्कि पुरानी जमीनी दुश्मनी का बदला है। यह क्षण पूरो के जीवन को तोड़ देता है– उसकी देह, पहचान और आत्मा तीनों का अपहरण हो जाता है।

यहाँ पूरो केवल अगवा नहीं होती – वह समाज की नजरों में अपवित्र, बेगानी और उपेक्षित बना दी जाती है। उसका अपना परिवार तक उसे अपनाने से मना कर देता है, क्योंकि अब वह "शुद्ध" नहीं रही।

3. "हमीदा" बननाः पहचान का संकट – अपहरण के बाद पूरो का नया नाम रखा जाता है – हमीदा। यह नाम सिर्फ एक शब्द नहीं, बल्कि पहचान की हत्या है। वह न हिंदू रह जाती है, न मुस्लिम पूरी तरह – वह एक 'पिंजर' बन जाती है, एक खाली ढाँचा, जिसमें आत्मा तड़प रही है।

हालाँकि रश्मन उसके साथ जबरदस्ती नहीं करता, बल्कि उसे मान–सम्मान देता है, पर पूरो का मन हमेशा इस सवाल से जूझता है – "मैं कौन हूँ?"

4. आत्मा की पुनर्रचनाः पीड़ा से शक्ति तक – समय के साथ पूरो अपने दर्द से एक नया आत्मबल प्राप्त करती है। वह रोती नहीं, भागती नहीं – वह स्वीकार करती है, और वहीं से उसकी नई चेतना का जन्म होता है।

वह लज्जो नामक एक हिंदू लड़की को मुस्लिमों के चंगुल से बचाकर उसके घर पहुँचाती है। यह वही पूरो है, जिसे उसका परिवार बचा न सका। अब वह खुद दूसरों की रक्षक बन चुकी है। उसका यह कार्य स्त्री की शक्ति और करुणा का उदाहरण बन जाता है।

5. अंत में निर्णयः पहचान की स्वतंत्रता – उपन्यास के अंतिम भाग में जब पूरो को यह अवसर मिलता है कि वह अपने परिवार के साथ हिंदुस्तान लौट जाए, तो वह मना कर देती है। वह अब हमीदा बन चुकी है – न मजबूरी में, बल्कि अपने निर्णय से। उसका यह नकार नारी स्वतंत्रता की सबसे बुलंद आवाज बन जाता है।

6. पूरोः हर युग की स्त्री की प्रतिनिधि – पूरो न केवल 1947 की एक लड़की है, वह हर उस स्त्री की प्रतीक है, जिसे समाज, धर्म और मर्यादा के नाम पर छला गया है। लेकिन पूरो सिर्फ पीड़िता नहीं है – वह उद्धारक भी है, निर्माता भी, और सबसे बढ़कर – स्वयं की निर्णायक भी।

निष्कर्ष – पूरो का चरित्र संघर्ष, पीड़ा, आत्म–मंथन और आत्मनिर्णय की अद्भुत यात्रा है। अमृता प्रीतम ने पूरो के माध्यम से यह सन्देश दिया कि स्त्री केवल शरीर नहीं होती, वह चेतना है, और जब वह जागती है, तो समाज की सबसे मजबूत दीवारें भी गिर सकती हैं।

पूरो वह प्रश्न है, जो आज भी गूंजता है – "मैं कौन हूँ?" – और वही उत्तर भी है: "मैं वही हूँ, जिसे मैं खुद चुनती हूँ।"

*****

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक